<u>विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय</u>

<u>वर्ग-अष्टम्</u>

<u>विषय-हिन्दी</u>

महादेवी वर्मा की रचना

कहानी पढ़ने के लिए

<u>संक्षिप्त परिचय:</u> कथा वाचक के पास एक पत्र आया है जिसमें उनसे एक हिरणी को पालने का अनुरोध है। तब वे याद करती हैं अपनी एक पालतू हिरणी की जिससे उन्हें बहुत प्रेम था परंतु उसके बाद उन्होंने निश्चय किया कि फिर कभी हिरण नहीं पालेंगी।

जानिए क्यूँ किया उन्होंने ऐसा निश्चय? महादेवी वर्मा की यह प्रेम और भोलेपन से पूर्ण कहानी - सोना हिरणी ।*

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डाक्टर धीरेन्द्र नाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है :

'गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था । बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं । परन्तु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए ।

'क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी ? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी हूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे । मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी ।'

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परन्तु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमलप्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है ।

> सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चम्पकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आयी थी, परन्तु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी । सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था । छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें । देखती थी तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी । उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर आँखों में कौंध जाती थी।

सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चम्पकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

परन्तु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। वह न किसी दुर्लभ खान के अमूल्य हीरे की कथा है और न अथाह समुद्र के महार्घ मोती की।

निर्जीव वस्तुओं से मनुष्य अपने शरीर का प्रसाधन मात्र करता है, अत: उनकी स्थिति में परिवर्तन के अतिरिक्त कुछ कथनीय नहीं रहता । परन्तु सजीव से उसे शरीर या अहंकार का जैसा पोषण अभीष्ट है, उससे जीवन-मृत्यु का संघर्ष है, जो सारी जीवनकथा का तत्व है ।

> मैं प्राय: सोचती हूँ कि मनुष्य जीवन की ऐसी सुन्दर ऊर्जा को निष्क्रिय और जड़ बनाने के कार्य को मनोरंजन कैसे कहता है।